

3. सामान्य जुकाम – यह एक विषाणु जनित रोग है जो राइनोवाइरस नामक विषाणु द्वारा फैलता है यह विषाणु नाक की आंतरिक झिल्ली व श्वसन मार्ग को संक्रमित करता है, जिससे नाक में खुजली, बार–बार छीक आना, खांसी सिरदर्द जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। यह रोग सामान्यतः संक्रमित व्यक्ति द्वारा प्रयोग में ली गई वस्तुओं के प्रयोग से फैलता है, सामान्यतः 3–4 दिन अविधि के पश्चात यह रोग सही हो जाता है।

4. **एस्केरिएसिस** – कृमि जनित रोग है।

रोग कारक – एस्केरिस लुम्ब्रीकोइड्स

रोग वाहक – दूषित जल ओर भोजन में उपस्थित इनके निषेचित अंडों के द्वारा

संक्रमण – दूषित भोजन सब्जियों फलों व पानी के द्वारा

प्रभावित अंग – पाचन तंत्र में छोटी आँत



लक्षण – पेट दर्द, उल्टियां, सिरदर्द आनितरिक रक्त
स्त्रात्र पेशियो में आनितरिक रक्त स्त्राव पेशियों में

बचाव – जल को उबालकर, छानकर पीना चाहिए तथ
स्वच्छ भोजन का सेवन करना

5. फाइलेरियोसिस—

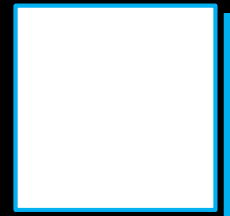
दाथी-पाव रोग

रोग कारक — वुचेरिया ब्रेनकोफटाई

रोग वाहक — मादा मच्छरो के द्वारा रक्त चूसने से

प्रभावित अंग — लसिका वाहिनियां व लसिका

लक्षण — बुखार आना, जगह-जगह से शरी का फूल जाना, हाथ व पैरो का फूल जाना, जनन अंगों में कुरूपता आना ।



वुचेरिया एक तंतुनुमा धागे के समान कृमि है जो दोनों
सिरों से मुड़ा हुआ रहता है इससे ग्रसित रोग में व्यक्ति
का पैर फूल कर हाथी के समान हो जाता है इसलिए इसे
हाथी पाव रोग भी कहते हैं इसके लिए हमें अपने
आस-पास मच्छरों को पनपने नहीं देने चाहिए।

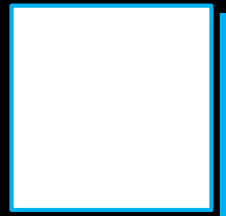


6. दाद (रिंग वर्ग) कवक जनित रोग

रोग कारक — माइक्रोस्पोरम (कवक)

संक्रमण — दूषित मिट्टी तथा रोग ग्रसित व्यक्तियों के सम्पर्क में आने पर

लक्षण — त्वचा एवं नाखून में सूखापन, पैर की अंगुलियों के बीच में कवको की वृद्धि से खुजल होना।

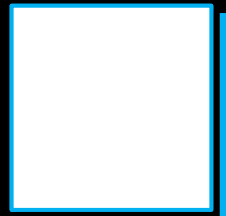


7. अमीबायसिस –

रोग कारक – एन्टाअमीबा हिस्टोलिका

वाहक – घरेलू मक्खी

स्त्रोत – दूषित जल और खाद्य पदार्थ



प्रभावित अंग— आंत और पाचन तंत्र

लक्षण — पेट दर्द, दस्त, दस्तक के साथ रक्त का आना ।



1. मलेरिया – प्रोटोजोआ जनित रोग

रोग कारक – मलेरिया रोग प्लाजमोडियम नामक प्रोटोजोआ के कारण फैलता है, इसकी चार जातियाँ इस रोग को फैलाने का कार्य करती हैं।



1. प्लाजमोडियम बाइवैक्स

2. प्लाजमोडियम मलैरी

3. प्लाजमोडियम आवेली

4. प्लाजमोडियम फैल्सीपेरस

इन चारो जातियों में से प्लाजमोडियम फैल्सी-पेरस
सबसे गंभीर एवं घातक मलेरिया फैलाता है।



2. रोगवाहक — मादा एनीफिज मच्छर रोग कारक को फेलाने का कार्य करता है।

प्रभावित अंग — यकृत और आर.बी.सी

लक्षण — इस रोग में 48 या 72 घंटे के समयानंतराल में ठंड लगते हुए तेज बुखार आता है। व सरदर्द होता है।

जब मच्छर दूसरे मानव को काटता है तो जीवाणु काटने के साथ मानव के शरीर में चले जाते हैं।

परिपक्व संक्रामक अवस्थाएँ (जीवाणु) अंग से निकलकर मच्छर की लार (लाल) ग्रंथि में चले जाते हैं।



मच्छर परपोषी

निषेधन और परिवर्धन मच्छर के आमाशय में होता है।



जब मच्छर रक्त आहार के साथ युग्मकजनकों को भी अंदर ले लेती है।

युग्मकजनक

मादा

पुरुष

लैंगिक अवस्थाएँ (युग्मकजनक) लाल रुधिर कोशिकाओं में परिवर्धन होता है।

परजीवी (जीवाणु) रक्त द्वारा व्यक्ति के शरीर में चले जाते हैं।

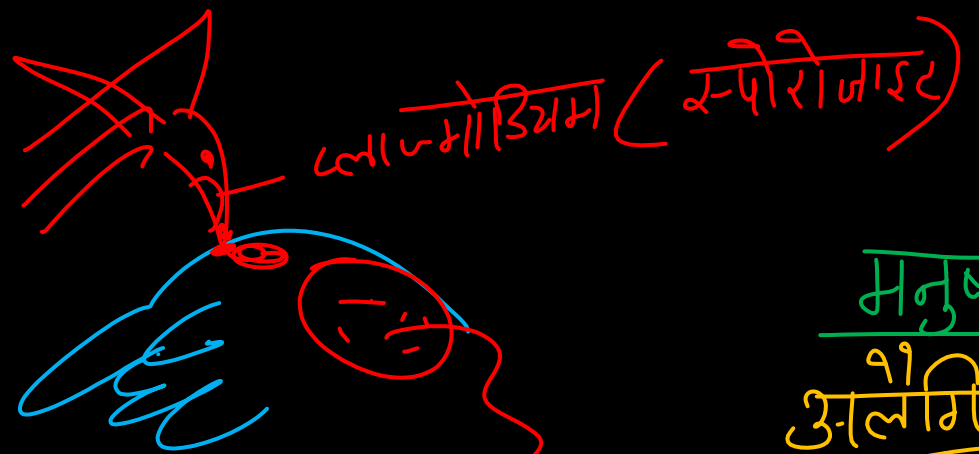
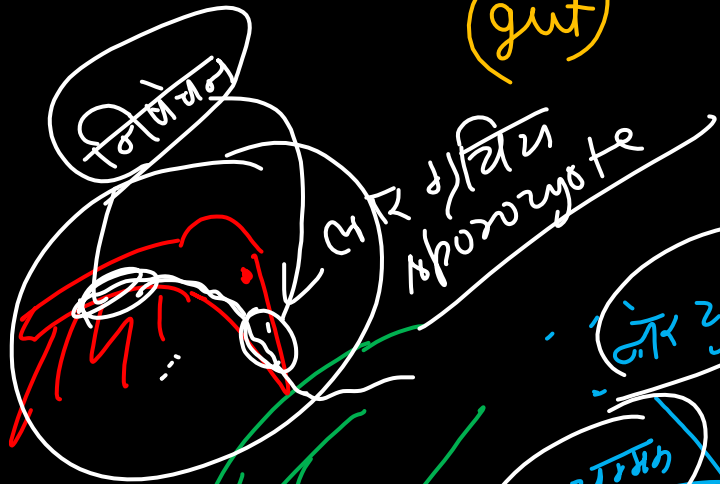


परजीवी युक्त कोशिकाओं में अलग-अलग रूप से जनन करता है। कोशिका को फोड़ देता है और रक्त में मोचित (छोड़) करता है।

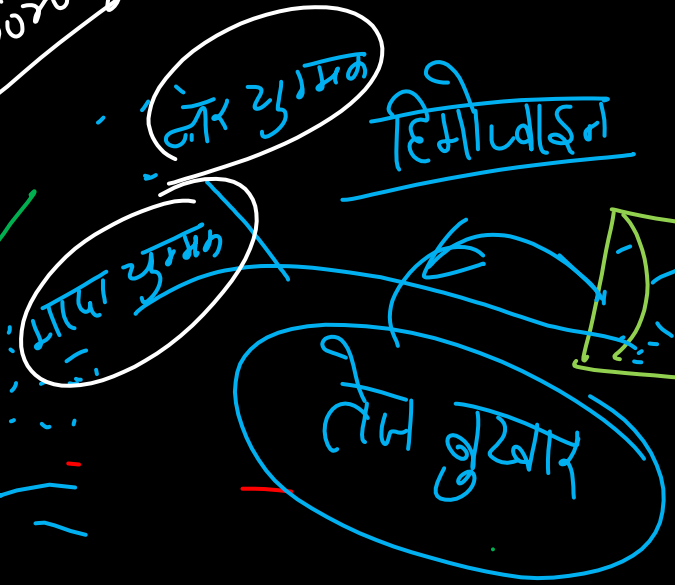
परजीवी लाल रुधिर कोशिकाओं में अलौकिक रूप से जनन करता है, उन्हें फोड़ देता है और इस प्रकार ज्वर उत्पन्न करता है। रक्त कोशिकाओं को संक्रमित करता है।

मानव परपोषी

માદા સ્નાયુકીર્ણ
મચ્છર
(લૈંગિક જનન)
(gut)



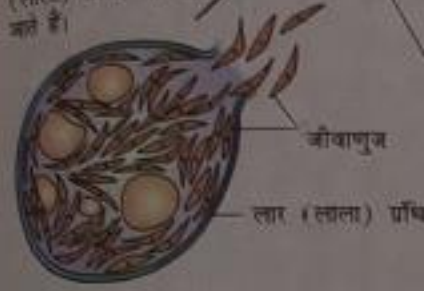
મનુષ્ય
અલૈંગિક
જનન
(ચક્ર, RBC)
ચક્ર
અલૈંગિક જનન



1-2 week
અલૈંગિક જનન

जब मच्छर दूसरे मानव को काटता है तब जीवाणु काटने के साथ मानव के शरीर में चले जाते हैं।

परिपक्व संक्रामक अवस्थाएँ (जीवाणु) अंग से निकलकर मच्छर की लार (लाल) ग्रंथि में चले जाते हैं।

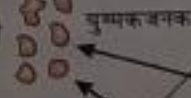


मच्छर परपोषी

निषेधन और परिवर्धन मच्छर के आमाशय में होता है



जब मच्छर रक्त आहार के साथ युग्मकजनकों को भी अंदर ले लेती है



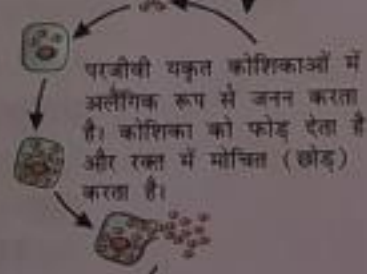
मादा

नर

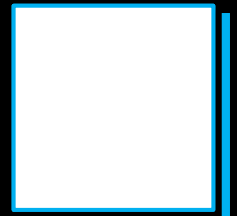
लैंगिक अवस्थाएँ (युग्मकजनक) लाल रुधिर कोशिकाओं में परिवर्धन होता है।

मानव परपोषी

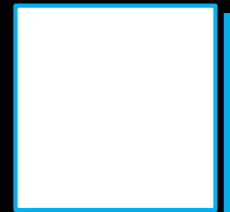
परजीवी (जीवाणु) रक्त द्वारा व्यक्ति के यकृत में चले जाते हैं।



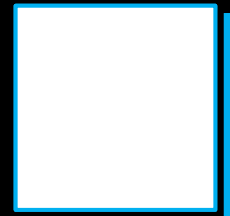
परजीवी लाल रुधिर कोशिकाओं में अलैंगिक रूप से जनन करता है, उन्हें फोड़ देता है और इस प्रकार ज्वर तथा अन्य लक्षणों का चक्र शुरू कर देता है। मोक्षित परजीवी, नई रक्त कोशिकाओं को संक्रमित करते हैं।



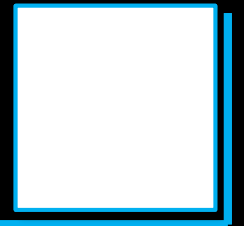
प्लाजमोडियम का जीवन चक्र – यह प्रोटोजोआ द्विपोषदिय पर जीवी ही जिसका जीवन चक्र दो पोषणों में पूरा होता है, मानव ~~प्रतिक्रमिक~~ ^{प्राथमिक} पोषी है। जहां पर अलैंगिक जीवन चक्र पूरा होता है तथा मादा एनाफिलिज मच्छर द्वितीय पोषी है। जहां पर लैंगिक जीवन चक्र पूर्ण होता है।



अलैंगिक जीवन चक्र – प्लाजमोडियम का अलैंगिक जीवन चक्र मनुष्य में पूर्ण होता है। स्पोरोज्वाइट प्लाजमोडियम की संक्रमण अवस्था है। जो मच्छर के काटने पर मानव के रूधिर में प्रवेश करती है। यह अवस्था मादाए ~~नम्रिजिल~~ मच्छर की लार में पाई जाती है। स्पोरोज्वाइट प्रवस्था “प्लाजमोडियम की संक्रमण प्रवस्था” है जो आकार में हास्यकार होता है। इसके अग्र सिरे पर माइक्रो^{पाई}भंडल नामक छिद्र पाया जाता है।

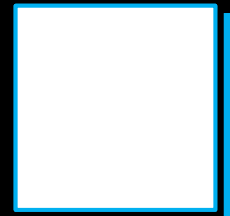


तथा माइक्रोपाइल से जुड़ी ~~स्क्व~~ अंग पाए जाते हैं, जो अपघटनीय एनजाइम से भरे होते हैं तथा स्पोरोज्वाइट को यकृत कोशिका में प्रवेश करने में सहायता करते हैं। मानव में अलैंगिक जीवन चक्र का अध्ययन निम्न प्रवस्था में किया जा सकता है।

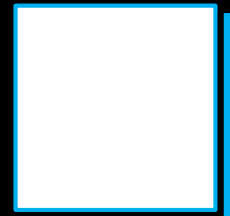


स्पोरोज्वाइट — मच्छर के काटने पर स्पोरोज्वाइट प्रवस्था मानवरूधिर में प्रवेश कर आधे घंटे तक रूधिर रहने के पचात यकृत कोशिकाओ में प्रवेश करती है।

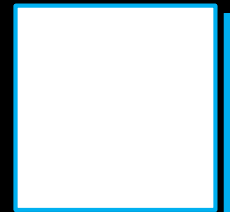
क्रीप्टोमीरोजाइट :- साइजोन्ट प्रवस्थाओं में द्विविखण्डन होता है जिसके परिणामस्वरूप 1000 से 1500 तक क्रीप्टोभारी ज्वाइट बनते हैं। य क्रीप्टोमीरोज्वाइट अंत में यकृत में उपस्थित यकृत पात्रों में मुक्त हो जाते हैं



ट्राफाज्वॉइट – रक्त में मुक्त क्रिस्टोमीरोज्वाइट आर.बी.सी को संक्रमित करते है। य आर.बी.सी के हिमोग्लोबिन को अपना भोजन बनाते है। य हिमोग्लोबिन को तोड़ कर ग्लोविन प्रोटीन का पाचन कर लेते है किंतु हिमेटिन कण पचित नही हो पाता हो ट्राफोज्वाइट कोशिकाओ में एकत्रित होकर कोशिका द्रव्य में बड़े आकार में दिखाई होता है जिससे यह अंगठी की तरह दिखाई देते है इसलिए इसे मुद्रिका प्रावसथा भी कहते है।

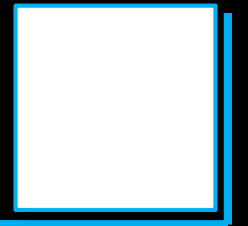


हिमेटिन वण्णन के अधिक जमा होने पर आर.बी.सी कोशिकाए फट जाते है जिससे हिमोज्वाइन कण रक्त में मुक्त होते है जिससे कंपकपी के साथ तेज बुखार आता है । और मलेरिया रोग की उत्पति होती है ।

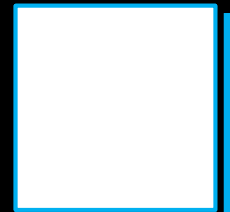


उद्भव काल — मलेरिया रोग में स्पोरोज्वाइट के संक्रमण से लेकर मलेरिया के प्रथम लक्षण दिखने तक के समय को उद्भव काल कहते हैं।

लैंगिक जनन की प्रवस्था — प्लाजमोडियम का लैंगिक जनन मादा एनाफिलिज मच्छर के शरीर में पूर्ण होता है, मच्छर जब मनुष्य को काता है तो मच्छर की आहार नाल में यंगमक जनन प्रवस्था पहुँच जाती है।

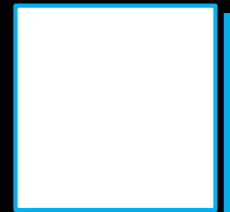


जहां पर अद्धसूत्री विभाजन के परिणाम स्वरूप यग्मको का निर्माण है। यग्मक निसोण के पश्चात निषेचन की क्रिया द्वारा यग्मनज बनता है। जिसे ऊसिष्ट कहते हैं, जो परिवर्धित होकर स्पोरोज्वाइट में बदलता है तथा मच्छर की लार ग्रन्थियों में आ जाता है।



संक्रमण रोगों से बचाव एवं नियंत्रण –

- संक्रामक रोगों से निम्न प्रकार से बचा जा सकता है
- व्यक्ति स्वयं की स्वच्छता का ध्यान रखे तथा स्वच्छ एवं पोषित भोजन ग्रहण करे।



- अनेक रोगों को फैलाने वाले रोग वाहक जीवों को नियन्त्रित करके संक्रामक रोगों से बचा जा सकता है।
- व्यक्ति को समय-समय पर नियमानुसार भिन्न-भिन्न रोगों के लिए टिके लेने चाहिए।
- एन्टीबायोटिक औषधियों के प्रयोग से भी संक्रामक रोग से बचा जा सकता है।

जब मच्छर दूसरे मानव को काटता है तब जीवाणु काटने के साथ मानव के शरीर में चले जाते हैं।

परिपक्व संक्रामक अवस्थाएँ (जीवाणु) अंग से निकलकर मच्छर की लार (लाल) ग्रंथि में चले जाते हैं।

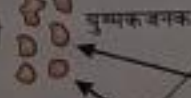


मच्छर परपोषी

निषेचन और परिवर्धन मच्छर के आमाशय में होता है



जब मच्छर रक्त आहार के साथ युग्मकजनकों को भी अंदर ले लेती है



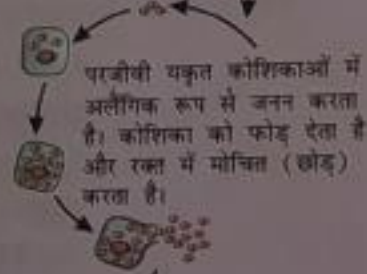
मादा

नर

लैंगिक अवस्थाएँ (युग्मकजनक) लाल रंधर कोशिकाओं में परिवर्धन होता है।

मानव परपोषी

परजीवी (जीवाणु) रक्त द्वारा व्यक्ति के यकृत में चले जाते हैं।



परजीवी लाल रंधर कोशिकाओं में अलैंगिक रूप से जनन करता है, उन्हें फोड़ देता है और इस प्रकार ज्वर तथा अन्य लक्षणों का चक्र शुरू कर देता है। मोक्षित परजीवी, नई रक्त कोशिकाओं को संक्रमित करते हैं।

